पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –X

HINDI

JUNE -MONTH

SYLLABUS

2020

Chapters:-

Ch-3-Bihari ke dohe

Ch-11-Diary ka ek panna

Ch-4-Manushyta

पद्य-भाग

पाठ-3

बिहारी के दोहे

***-शब्दार्थ**

सहित-अच्छा लगना	पितु -पीला
पटु-कपड़ा	नीलमणि-नीला पर्वत
आतुप -धूप	अहि -सांप
दीरघ-दाघ -प्रचंड	निदाघ -ग्रीष्म ऋतू
बतरस -बातचीत	
लुकाछिपी -छुपना	सौह -सौगंद ,शपथ
भौहनु -भौहो से	नटी-मना करना
रीझत -मोहित	खिझत-गुस्सा करना
भौन -भवन	सघन -घना
पैठी-घुसना	कागद-कागज़
सुबस -अपनी इच्छा	केसव -कृष्ण
छापे -छापा	

भावार्थ:-

1-सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात।
मनौ नीलमनि सैल पर आतपु परयौ प्रभात॥

इस दोहे में कवि ने कृष्ण के साँवले शरीर की सुंदरता का बखान किया है। कवि का कहना है कि कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र ऐसी शोभा दे रहा है, जैसे नीलमणि पहाड़ पर सुबह की सूरज की किरणें पड़ रही हैं।

2-कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ दाघ निदाघ।।

इस दोहे में कवि ने भरी दोपहरी से बेहाल जंगली जानवरों की हालत का चित्रण किया है। भीषण गर्मी से बेहाल जानवर एक ही स्थान पर बैठे हैं। मोर और सांप एक साथ बैठे हैं। हिरण और बाघ एक साथ बैठे हैं। कवि को लगता है कि गर्मी के कारण जंगल किसी तपोवन की तरह हो गया है। जैसे तपोवन में विभिन्न इंसान आपसी द्वेषों को भुलाकर एक साथ बैठते हैं, उसी तरह गर्मी से बेहाल ये पशु भी आपसी द्वेषों को भुलाकर एक साथ बैठे हैं।

3-बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

इस दोहे में कवि ने गोपियों द्वारा कृष्ण की बाँसुरी चुराए जाने का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि गोपियों ने कृष्ण की मुरली इस लिए छुपा दी है ताकि इसी बहाने उन्हें कृष्ण

से बातें करने का मौका मिल जाए। साथ में गोपियाँ कृष्ण के सामने नखरे भी दिखा रही हैं। वे अपनी भौहों से तो कसमे खा रही हैं लेकिन उनके मुँह से ना ही निकलता है।

4-कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात॥
इस दोहे में कवि ने उस स्थिति को दर्शाया है जब भरी भीड़ में भी दो प्रेमी बातें करते हैं और उसका किसी को पता तक नहीं चलता है। ऐसी स्थिति में नायक और नायिका आँखों ही आँखों में रूठते हैं, मनाते हैं, मिलते हैं, खिल जाते हैं और कभी कभी शरमाते भी हैं।

5-बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह॥
इस दोहे में कवि ने जेठ महीने की गर्मी का चित्रण किया है। कवि का कहना है कि जेठ की गरमी इतनी तेज होती है की छाया भी छाँह ढ़ूँढ़ने लगती है। ऐसी गर्मी में छाया भी कहीं नजर नहीं आती। वह या तो कहीं घने जंगल में बैठी होती है या फिर किसी घर के अंदर।

6-कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥
इस दोहे में कवि ने उस नायिका की मन:स्थिति का चित्रण किया है जो अपने प्रेमी के लिए संदेश भेजना चाहती है। नायिका को इतना लम्बा संदेश भेजना है कि वह कागज पर समा नहीं पाएगा। लेकिन अपने संदेशवाहक के सामने उसे वह सब कहने में शर्म भी आ रही है। नायिका संदेशवाहक से कहती है कि तुम मेरे अत्यंत करीबी हो इसलिए अपने दिल से तुम मेरे दिल की बात कह देना।

7-प्रगट भए द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥
कवि का कहना है कि श्रीकृष्ण ने स्वयं ही ब्रज में चंद्रवंश में जन्म लिया था मतलब अवतार लिया था। बिहारी के पिता का नाम केसवराय था। इसलिए वे कहते हैं कि हे कृष्ण आप तो मेरे पिता समान हैं इसलिए मेरे सारे कष्ट को दूर कीजिए।

8-जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥
आडम्बर और ढ़ोंग किसी काम के नहीं होते हैं। मन तो काँच की तरह क्षण भंगुर होता है जो व्यर्थ में ही नाचता रहता है। माला जपने से, माथे पर तिलक लगाने से या हजार बार राम राम लिखने से कुछ नहीं होता है। इन सबके बदले यदि सच्चे मन से प्रभु की आराधना की जाए तो वह ज्यादा सार्थक होता है।

***-प्रश्न उत्तर**

1-छाया कब छाया ढ़ूँढ़ने लगती है?

ग्रीष्म के जेठ मास की दोपहर में धूप इतनी तेज होती है कि सिर पर आने लगती है जिससे वस्तुओं की छाया **छाया** छोटी होती जाती है। इसलिए कवि का कहना है कि जेठ की दुपहरी की भीषण गर्मी में छाया भी त्रस्त होकर छाया ढूँढ़ने लगती है।

2-बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की' बात-स्पष्ट कीजिए।

2-बिहारी की नायिका अपने प्रिय को पत्र द्वारा संदेश देना चाहती है पर कागज पर लिखते समय कँपकँपी और आँसू आ जाते हैं। नायिका विरह की अग्नि में जल रही है। लिखते समय वह अपने मन की बात बताने में खुद को असमर्थ पाती है। किसी के साथ संदेश भेजेगी तो कहते लज्जा आएगी। इसलिए वह सोचती है कि जो विरह अवस्था उसकी है, वही उसके प्रिय की भी होगी। अतः वह कहती है कि अपने हृदय की वेदना से मेरी वेदना को समझ जाएँगे। कुछ कहने सुनने की जरूरत नहीं रह जाती।

3. सच्चे मन में राम बसते हैं-दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

बिहारी जी के अनुसार भक्ति का सच्चा रूप हृदय की सच्चाई में निहित है। बिहारी जी ईश्वर प्राप्ति के लिए धर्म कर्मकांड को दिखावा समझते थे। माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से प्रभु नहीं मिलते। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परन्तु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

4. गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं?

कृष्ण जी को अपनी बाँसुरी बहुत प्रिय है। वे उसे बजाते ही रहते हैं। गोपियाँ कृष्ण से बातें करना चाहती हैं। वे कृष्ण को रिझाना चाहती हैं। उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मुरली छिपा देती हैं। ताकि बाँसुरी के बहाने कृष्ण उनसे बातें करें और अधिक समय तक वे उनके निकट रह पाए।

5. बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

बिहारी ने बताया है कि घर में सबकी उपस्थिति में नायक और नायिका इशारों में अपने मन की बात करते हैं। नायक ने सबकी उपस्थिति में नायिका को इशारा किया। नायिका ने इशारे से मना किया। नायिका के मना करने के तरीके पर नायक रीझ गया। इस रीझ पर नायिका खीज उठी। दोनों के नेत्र मिल जाने पर आँखों में प्रेम स्वीकृति का भाव आता है। इस पर नायक प्रसन्न हो जाता है और नायिका की आँखों में लजा जाती है।

***-निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –**

1-मनौ नीलमनी-सैल पर आतपु पर्यौ प्रभात।

इस पंक्ति में कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन है। कृष्ण के नीले शरीर पर पीले रंग के वस्त्र हैं। वे देखने में ऐसे प्रतीत होते हैं मानों नीलमणी पर्वत पर सुबह का सूर्य जगमगा उठा हो।

2-जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।

इस पंक्ति का आशय है कि ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी से पूरा जंगल तपोवन जैसा पवित्र बन गया है। सबकी आपसी दुश्मनी समाप्त हो गई है। साँप, हिरण और सिंह सभी गर्मी से बचने के लिए साथ रह रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे तपस्वी का सानिध्य पाकर ये आपसी वैर-भाव भूल गए हैं।

3-जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु।।

इन पंक्तियों द्वारा कवि ने बाहरी आडंबरों का खंडन करके भगवान की सच्ची भक्ति करने पर बल दिया है। इसका भाव है कि माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से एक भी काम नहीं बनता। कच्चे मन वालों का हृदय डोलता रहता है। वे ही ऐसा करते हैं। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परन्तु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं। राम तो सच्चे मन से याद करने वाले के हृदय में रहते हैं।

व्याकरण-भाग

शब्द और पद

शब्द की हर एक इकाई वर्ण कहलाती है। **वर्ण - क+अ+म+अ+ल+अ = कमल**

स्वर + व्यंजन

शब्द-जैसे- र + आ + न + ई =रानी

सार्थक शब्द — **रोटी ,मोर,उसका ,जाना**

निरर्थक शब्द — **वाये ,चुई ,मुई, वोटी**

शब्द और पद:- यहाँ शब्द और पद का अंतर समझ लेना चाहिए। ध्वनियों के मेल से शब्द बनता है। जैसे- **प+आ+न+ई= पानी**। यही शब्द जब वाक्य में अर्थवाचक बनकर आये, तो वह पद कहलाता है।

जैसे- पुस्तक लाओ। इस वाक्य में दो पद है- एक नामपद 'पुस्तक' है और दूसरा क्रियापद 'लाओ' है।

शब्द के भेद:

अर्थ, प्रयोग, उत्पत्ति, और व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द के कई भेद है। इनका वर्णन निम्न प्रकार है-

(1) अर्थ की दृष्टि से शब्द-भेद:

(i)सार्थक शब्द (ii) निरर्थक शब्द

(i)सार्थक शब्द:- जिस वर्ण समूह का स्पष्ट रूप से कोई अर्थ निकले, उसे 'सार्थक शब्द' कहते है।
जैसे- कमल, खटमल, रोटी, सेव आदि।

(ii)निरर्थक:- जिस वर्ण समूह का कोई अर्थ न निकले, उसे निरर्थक शब्द कहते है।
जैसे- राटी, विठा, चीं, वाना, वोती आदि।

सार्थक शब्दों के अर्थ होते है और निरर्थक शब्दों के अर्थ नहीं होते। जैसे- 'पानी' सार्थक शब्द है और 'नीपा' निरर्थक शब्द, क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

(2) प्रयोग की दृष्टि से शब्द-भेद:-

शब्दों के सार्थक मेल से वाक्यों की रचना होती है। वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। शब्द भाषा की प्राणवायु होते हैं। वाक्यों में शब्दों का प्रयोग किस रूप में किया जाता है, इस आधार पर हम शब्दों को दो वर्गों में बाँटते हैं:

(i)विकारी शब्द (ii)अविकारी शब्द

(i)विकारी शब्द :-(जो बदला जा सके) जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तन का विकार आता है, उन्हें विकारी शब्द कहते है।
इसे हम ऐसे भी कह सकते है- विकार यानी परिवर्तन। वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार (परिवर्तन) आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।

जैसे- लिंग- लड़का पढता है।....... लड़की पढ़ती है।

वचन- लड़का पढता है।........लड़के पढ़ते है।

कारक- लड़का पढता है।........ लड़के को पढ़ने दो।

विकारी शब्द चार प्रकार के होते है-
(i) संज्ञा (noun) (ii) सर्वनाम (pronoun) (iii) विशेषण (adjective) (iv) क्रिया (verb)

(ii)अविकारी शब्द -(जो बदला नही जा सकता)जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नही होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते है।

दूसरे शब्दों में- अ विकारी यानी जिनमें परिवर्तन न हो। ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।
जैसे- परन्तु, तथा, यदि, धीरे-धीरे, अधिक आदि।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते है-
(i)क्रिया-विशेषण (Adverb)
(ii)सम्बन्ध बोधक (Preposition)
(iii)समुच्चय बोधक(Conjunction)
(iv)विस्मयादि बोधक(Interjection)

(3) उत्पति की दृष्टि से शब्द-भेद

(i)तत्सम शब्द (ii)तद्भव शब्द (iii)देशज शब्द एवं **(iv)विदेशी शब्द**।

(i) तत्सम शब्द :- संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिन्दी में अपने वास्तविक रूप में प्रयुक्त होते है, उन्हें तत्सम
शब्द कहते है।
दूसरे शब्दों में- तत् (उसके) + सम (समान) यानी वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव (मूलरूप में) के ले लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

सरल शब्दों में- हिंदी में संस्कृत के मूल शब्दों को 'तत्सम' कहते है।
जैसे- कवि, माता, विद्या, नदी, फल, पुष्प, पुस्तक, पृथ्वी, क्षेत्र, कार्य, मृत्यु आदि।

यहाँ संस्कृत के उन तत्स्मो की सूची है, जो संस्कृत से होते हुए हिंदी में आये है-

तत्सम(संस्कृत)	**तत्भव (हिंदी)**	**तत्सम**	**हिंदी**
आम्र	आम	गोमल ,गोमय	गोबर
उष्ट्र	ऊँट	घोटक	घोड़ा

तत्सम(संस्कृत)	**तत्भव (हिंदी)**	**तत्सम**	**हिंदी**
चंचु	चोंच	पर्यक	पलंग
त्वरित	तुरंत	भक्त	भात
शलाका	सलाई	हरिद्रा	हल्दी, हरदी

गद्य भाग

पाठ-2

डायरी का एक पन्ना -सीताराम सेकसरिया

*-शब्दार्थ:-

पुरावृत्ति -फिर से आना

गश्त-घूम घूम कर चौकीदारी करना

मोनुमेंट-स्मारक

चौरंगी-कलकाता का एक स्थान

संगीन -गंभीर

अपने-हम या मै

सार्जेंट -सेना में एक पद

काउन्सिल-परिषद्

वालेंटियर -स्वयम सेवक

*-प्रश्न उत्तर:-

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (10-12 शब्दों में) लिखिए –**

1-कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

1-देश का स्वतंत्रता दिवस एक वर्ष पहले इसी दिन मनाया गया था। इससे पहले बंगाल वासियों की भूमिका नहीं थी। अब वे प्रत्यक्ष तौर पर जुड़ गए। इसलिए यह महत्वपूर्ण दिन था।

2-सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

2-सुभाषा बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था परन्तु पूलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

3-विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हूई?

3-बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जैसे ही झंडा गाड़ा, पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और लोगों पर लाठियाँ चलाई।

4-लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

4-लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर बताना चाहते थे कि वे अपने को आज़ाद समझ कर आज़ादी मना रहे हैं। उनमें जोश और उत्तसाह है।

5-पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों और मैदानों को क्यों घेर लिया था?

5-आज़ादी मनाने के लिए पूरे कलकत्ता शहर में जनसभाओं और झंडारोहण उत्सवों का आयोजन किया गया। इसलिए पार्कों और मैदानों को घेर लिया था।

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –**

1-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं ?

1-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता शहर ने शहर में जगह-जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले गए तथा झंड़ा फहराया गया था। टोलियाँ बनाकर भीड़ उस स्थान पर जुटने लगी जहाँ सुभाष बाबू का जुलूस पहुँचना था। पुलिस की लाठीचार्ज तथा गिरफ़तारी लोगों के जोश को कम न कर पाए।

2-आज जो बात थी वह निराली थी' – किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

2-आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि स्वतंत्रता दिवस मनाने की प्रथम आवृत्ति थी। पुलिस ने सभा करने को गैरकानूनी कहा था किंतु सुभाष बाबू के आह्वान पर पूरे कलकत्ता में अनेक संगठनों के माध्यम से जुलूस व सभाओं की जोशीली तैयारी थी। पूरा शहर झंडों से सजा था तथा कौंसिल ने मोनुमेंद के नीचे झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का सरकार को खुला चैलेंज दिया हुआ था। पुलिस भरपूर तैयारी के बाद भी कामयाब नहीं हो पाई।

3-पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

3-पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी जनसभा करना या जुलूस निकालना कानून के खिलाफ़ होगा। सभाओं में भाग लेने वालों को दोषी माना जाएगा। कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इस प्रकार ये दोनों नोटिस एक दुसरे के खिलाफ़ थे।

4-धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

4-जब सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया तो स्त्रियाँ जुलूस बनाकर चलीं परन्तु पुलिस ने लाठी चार्ज से उन्हें रोकना चाहा जिससे कुछ लोग वहीं बैठ गए, कुछ घायल हो गए और कुछ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। इसलिए जुलूस टूट गया।

5-डा. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फ़ोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

5-डा. दास गुप्ता लोगों की फ़ोटो खिचवा रहे थे। इससे अंग्रेज़ों के जुल्म का पर्दाफ़ाश किया जा सकता था, दूसरा यह भी पता चल सकता था कि बंगाल में स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत काम हो रहा है।

*-**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –**

1-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

1-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भुमिका रही थी। भारी पुलिस व्यवस्था के बाद भी जगह-जगह स्त्री जुलूस के लिए टोलियाँ बन गई थीं। मोनुमेंट पर भी स्त्रियों ने निडर होकर झंडा फहराया, अपनी गिरफ्तारियाँ करवाई तथा उनपर लाठियाँ बरसाई। इनसब के बाद भी स्त्रियाँ लाल बाज़ार तक आगे बढ़ती गईं।

2-जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

2-जुलूस के लाल बाज़ार आने पर भीड़ बेकाबू हो गई। पुलिस डंडे बरसा रही थी, लोगों को लॉकअप में भेज रही थी। स्त्रियाँ भी अपनी गिरफ़्तारी दे रही थीं। दल के दल नारे लगा रहे थे। लोगों का जोश बढ़ता ही जा रहा था। लाठी चार्ज से लोग घायल हो गए थे। खून बह रहा था। चीख पुकार मची थी फिर भी उत्साह बना हुआ था।

3-जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

3-इस समय देश की आज़ादी के लिए हर व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था। अंग्रेज़ों ने कानून बनाकर आन्दोलन, जुलूसों को गैर कानूनी घोषित किया हुआ था परन्तु लोगों पर इसका कोई असर नहीं था। वे आज़ादी के लिए अपना प्रदर्शन करते रहे, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करते रहे थे।

4-बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

4-सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में कलकत्ता वासियों ने स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी ज़ोर-शोर से की थी। पुलिस की सख्ती, लाठी चार्ज, गिरफ़्तारियाँ, इन सब के बाद भी लोगों में जोश बना रहा। लोग झंडे फहराते, वंदे मातरम बोलते हुए, खून बहाते हुए भी जुलूस निकालने को तत्पर थे। जुलूस टूटता फिर बन जाता। कलकत्ता के इतिहास में इतने प्रचंड रूप में लोगों को पहले कभी नहीं देखा गया था।

आशय स्पष्ट कीजिए –

1-आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

1-हजारों स्त्री पुरूषों ने जुलूस में भाग लिया, आज़ादी की सालगिरह मनाने के लिए बिना किसी डर के प्रदर्शन किया। पुलिस के बनाए कानून कि, जुलूस आदि गैर कानूनी कार्य, आदि की भी परवाह नहीं की। पुलिस की लाठी चार्ज होने पर लोग घायल हो गए। खून बहने लगे परन्तु लोगों में जोश की कोई कमी नहीं थी। बंगाल के लिए कहा जाता था कि स्वतंत्रता के

लिए बहुत ज़्यादा योगदान नहीं दिया जा रहा है। आज की स्थिति को देखकर उन पर से यह कंलक मिट गया।

2-खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी?

2- पुलिस ने कोई प्रदर्शन न हो इसके लिए कानून निकाला कि कोई जुलूस आदि आयोजित नहीं होगा परन्तु सुभाष बाबू की अध्यक्षता में कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिक्षा पढ़ी जाएगी। सभी को इसके लिए आंमत्रित किया गया, खूब प्रचार भी हुआ। सारे कलकत्ते में झंडे फहराए गए थे। सरकार और आम जनता में खुली लड़ाई थी|

व्याकरण-संधि

व्याख्या :-1-संधि शब्द का अर्थ है 'मेल'। दो निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहलाता है। सम् + तोष = संतोष

देव + इंद्र = देवेंद्र   **भानु + उदय = भानूदय**

अ + इ =ए   **उ + उ = ऊ**

संधि तीन प्रकार है

1-स्वर संधि.

2- व्यंजन संधि

3- विसर्ग संधि

1) स्वर संधि:-

दो स्वरों के आस -पास आने पर उनमें जो परिवर्तन होता है , उसे स्वर संधि कहते है।

जैसे – विद्या + आलय = विद्यालय।

1) दीर्घ स्वर संधि

अ इ उ के बाद दीर्घ अ इ उ आ जाए तो दोनो मिलकर दीर्घ संधि आ ई ऊ हो जाते है।

अ + आ = आ हिम + आलय = हिमालय

अ + आ = आ

इ + ई = ई - गिरि + ईश = गिरीश

इ + ई = ई

ई + इ = ई - मही + इंद्र = महींद्र

ई + ई = ई - नदी + ईश = नदीश

उ + ऊ = ऊ- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

उ + ऊ = ऊ

ऊ + उ = ऊ- वधू + उत्सव = वधूत्सव

ऊ + उ = ऊ

ऊ + ऊ = ऊ - भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

ऊ + ऊ = ऊ

2- स्वर संधि :-

इस संधि मे अ, आ के आगे इ , ई हो तो ए

अ, आ के आगे उ, ऊ हो तो औ

और अगर अ, आ के आगे ऋ हो तो अर् हो जाता है उसे गुण संधि कहते है।

अ + इ = ए- नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + इ = ए

अ + ई = ए- नर + ईश = नरेश

अ +ई = ए

आ + इ = ए- महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ + उ = ओ ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश

अ + उ = ओ

आ+उ= ओ महा + उत्सव = महोत्सव

आ + उ = ओ

3)यण स्वर संधि:- इस संधि मे इ , ई , उ , ऊ ,और ऋ के बाद कोई अलग स्वर आए तो इनका परिवर्तन क्रमशः य , व् और र में हो जाता है !

इ का य = इति +आदि = इत्यादि

इ + आ = य

ई का य = देवी + आवाहन = देव्यावाहन

ई + आ = या

उ का व = सु +आगत = स्वागत

उ + आ = वा

ऊ का व = वधू +आगमन = वध्वागमन

4) वृद्धि स्वर संधि:-अ , आ + ए ऐ -> ऐ

अ, आ + ओ औ -> औ

अ +ए =ऐ एक +एक = एकैक

अ-+ ए ऐ

अ +ऐ =ऐ मत +ऐक्य = मतैक्य

अ +ऐ ऐ

अ +औ=औ परम +औषध = परमौषध

अ +औ = औ

आ +औ =औ महा +औषध = महौषध

आ +औ औ

आ +ओ =औ महा +ओघ = महौघ

आ +औ औ

5)अयादि स्वर संधि:- इस संधि मे ए , ऐ और ओ , औ के पशचात इन्हें छोड़कर को

अन्य स्वर हो तो इनका परिवर्तन क्रमशः अय , आय , अव , आव में हो जाता है)

ए का अय= ने +अन = नयन

ए + अ +अय = न +अय +न

ऐ का आय नै +अक = नायक

ऐ+अ = न +आ य+क +नायक

ओ का अव पो +अन = पवन

ओ +अ=अव प+अव+न

औ का आव पौ +अन = पावन

औ +अ =आव -प+आव+न

न का परिवर्तन ण में = श्रो +अन = श्रवण

ओ + अ

2)व्यंजन संधि:- व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रुपान्तरण होता है , उसे व्यंजन संधि कहते हैं

प्रति+छवि=प्रतिच्छवि

दिक्+अन्त=दिगन्त

क+अ=दिक्नत

दिक्+गज=दिग्गज

क+ग =गग दिक्गज अनु+छेद=अनुच्छेद

उ+छ च=अनुचछेद

अच +अन्त = अजन्त

च+अ अजनत

3)विसर्ग संधि :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है , उसे विसर्ग संधि कहते हैं ! **अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अ:=प्रातः अत:**

मन:+रथ= मनोरथ यश:+अभिलाषा=यशोभिलाषा अध:+गति=अधोगति

नि:+छल=निश्छल दु: +गम = दुर्गम

गद्य-भाग
पाठ-12
(ततांरा-वामीरो कथा)
(लीलाधर मंडलोई)

*-शब्दार्थ:-

-श्रृंखला-क्रम ,कड़ी	-आदिम -प्रांभिक
-विभक्त -बंटा हुआ	-आत्मीय -अपना
-विलक्षण -असाधारण	-बयार-मंद हवा
तंद्र-एकाग्रता	-विकल-बेचैन
-संचार-उत्पन्न	-असंगत -अनुचित
सम्मोहित- मुग्ध	-झुंझलाना - चिड़ना
-रोमांचित - पुलकित	-निश्चल- स्थिर
-अफवाह - उड़ती खबरे	-उफनना - उबाल आना
शमन -शांत होना	-घोंपना भोंकना,चुभोंना

*-प्रश्न-उत्तर:-

1-तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या थी?
उत्तर- तताँरा और वामीरो के गाँव की यह रीति थी कि विवाह के लिए लड़के-लड़की का एक ही गाँव का होना जरूरी था। दूसरे गाँव के युवक के साथ संबंध असंभव था।

2-तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?
उत्तर- तताँरा की तलवार यद्यपि लकड़ी की थी, पर इसके बावजूद लोगों का मानना था कि उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा तलवार को कभी अपने से अलग होने नहीं देता था। लोग यह मानते थे कि तताँरा अपने साहसिक कारनामे इसी तलवार के कारण ही कर पाता है। उसमें बड़ी शक्ति थी।

3-निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?
उत्तर- निकोबार के लोग तताँरा को उसके साहसी और परोपकारी स्वभाव के कारण पसंद करते थे वह एक सुंदर और शक्तिशाली युवक था। वह सदा लोगों की सहायता करता रहता था। तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। वह अपने गाँव वालों की ही नहीं, समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना धर्म समझता था। सभी उसका आदर करते थे। मुसीबत की घड़ी में वह लोगों के पास तुरंत पहुँच जाता था।

4- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?
उत्तर- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए अस्त्र-शस्त्र चलाने संबंधी आयोजन तथा पशु पर्व किए जाते थे।

5-'तताँरा-वामीरो कथा' का संदेश स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- 'तताँरा-वामीरो कथा' एक लोकगाथा है। इसमें यह संदेश दिया गया है कि प्रेम को किसी बंधन, जड़ता तथा सीमाओं में बाँधना उचित नहीं है। यदि कोई गाँव, प्रदेश या क्षेत्र प्रेम को पनपने के लिए खुला अवसर नहीं देता तो इससे सर्वनाश होता है। धरती में भेदभाव बढ़ते हैं। पहले से बँटी हुई धरती और अवसर नहीं देता तो इससे मानवता का क्षय होता है। भावनाएँ एक होने की बजाय खंडित होती हैं। अतः गाँव, प्रदेश या अन्य संकीर्ण नियमो को तोड़कर हमें उदारता के साथ सबको अपनाना चाहिए।

7-नकी **तताँँरा और वामीरो की मृत्यु कैसे हुई? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।**
उत्तर- पशु-पर्व के मौके पर तताँरा और वामीरो को इक्कठा देखकर वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाजें उठाने लगे। यह तताँरा के लिए अहसनीय था। वामीरो अब भी रोए जा रही थी। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम नहीं था कि क्या कदम उठाना चाहिए? अनायास उसका हाथ तलवार की मूढ़ पर जा टिका क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। वह हाँफ रहा था। अचानक जहाँ एक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ो में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक तताँरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सभी व्याकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे

सिहर उठे। उधर वामीरो फटती हुई धरती के कनारे तताँरा का नाम पुकारते हुए दौड़ रही थी। द्वीप दो टुकड़ों में विभक्त हो चुका था। तताँरा और वामीरो द्वीप के साथ समुन्द्र में धँस गए, और उमृत्यु हो गई।

8-शाम के समय, समुद्र किनारे तताँरा की प्राकृतिक अनुभूति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- एक शाम तताँरा दिन-भर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चाहचाहाहटें शनैः शनैः क्षीण हों को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास में उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानों बहता हुआ उसकी तरफ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल-सा उस तरफ़ बढ़ता गया। अंततः उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगो को निहारते हुए गा रही थी। यह एक शृंगार गीत था।

Vyakr`:-vaKy:-

- वाक्यों के सामने दिए कोष्ठक में (√ का चिन्ह लगाकर बताएँ कि वह वाक्य किस प्रकार का है

  क) निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ख) तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया? प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ग) वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  घ) क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम? प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ङ) वाह! कितना सुंदर नाम है। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

च) मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

उत्तर:- क) विधानवाचक **ख) प्रश्नवाचक**

ग) विधानवाचक **घ) प्रश्नवा**

ङ) विस्मयादिबोध **च) विधानवाचक**

Ô-इस पाठ में ' देखना ' क्रिया के कई रूप आए हैं ' देखना ' के इन विभिन शब्दप्रयोगों में क्या अंतर है? वाक्यप्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

Ô-उत्तर:-

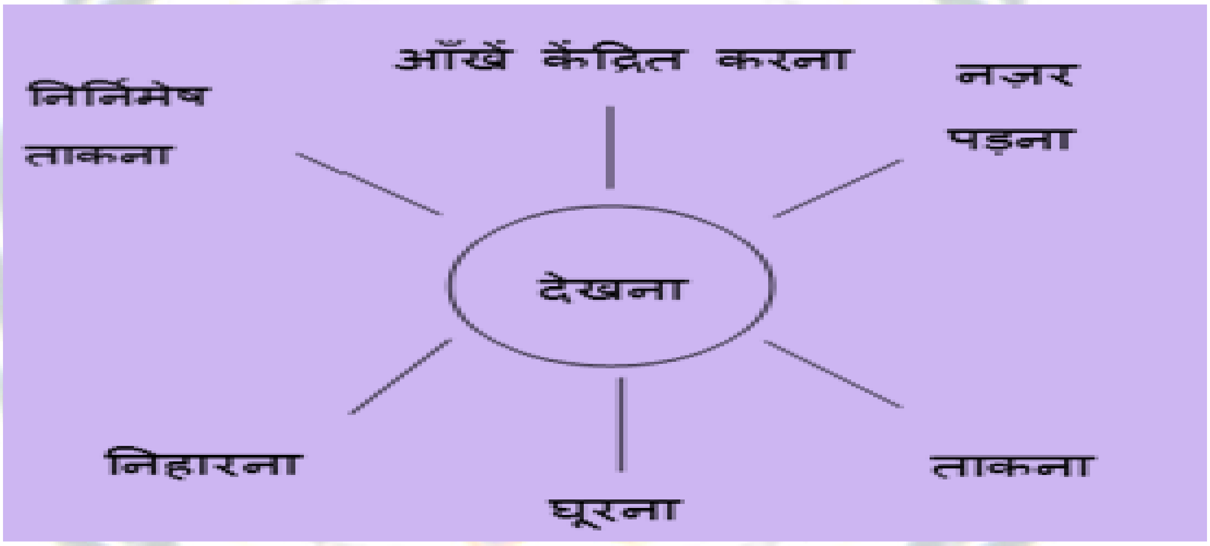

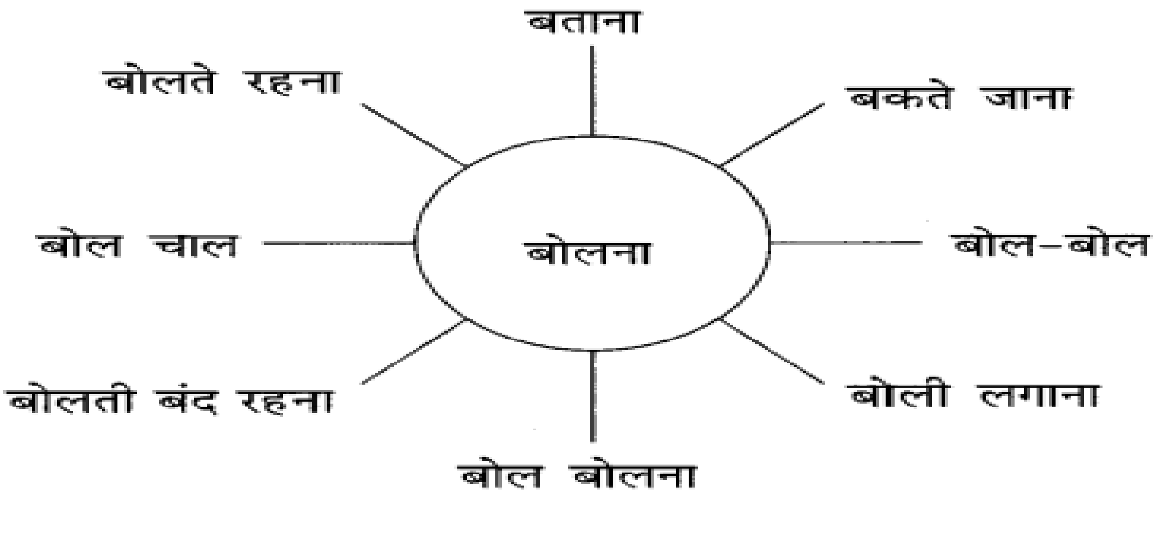

***-वाक्यों के उदाहरण:-**

	संयुक्त वाक्य	मिश्रित वाक्य
(i)	मैं अच्छा खेला, किंतु हार गया।	यद्यपि मैं अच्छा खेला, फिर भी हार गया।
(ii)	पाठ समाप्त हुआ और घंटी बज गई।	जैसे ही पाठ समाप्त हुआ वैसे ही घंटी बज गई।
(iii)	बिजली जाते ही टी०वी० बंद हो गई।	जैसे ही बिजली गई वैसे ही टी०वी० बंद हो गई।
(iv)	वह मेहनती है, अत: वह पराजय स्वीकार नहीं करता।	वह ऐसा मेहनती है जो पराजय स्वीकार नहीं करता।
(v)	वह परिश्रमी था और सफल हुआ।	वह परिश्रमी था इसलिए सफल हुआ।
(vi)	राम ने कहानी सुनाई और करन रो पड़ा।	राम ने ऐसी कहानी सुनाई कि करन रो पड़ा।
(vii)	सूरज निकला और चिड़िया चहचहाने लगी।	जब सूरज निकला तब चिड़िया चहचहाने लगी।
(viii)	पुलिस ने चोर को देखा और उसे पकड़ लिया।	ज्यों ही पुलिस ने चोर को देखा, त्यों ही उसे पकड़ लिया।
(ix)	परीक्षाएँ समाप्त हुईं और हम घूमने चले गए।	जैसे ही परीक्षाएँ समाप्त हुईं वैसे ही हम घूमने चले गए।
(x)	घंटी बजी और छात्र बाहर आ गए।	जैसे ही घंटी बजी, वैसे ही छात्र बाहर आ गए।
(xi)	गाँव में एक कुआँ था और उसके चारों ओर फूलों की क यारियाँ थीं।	गाँव में एक ऐसा कुआँ था जिसके चारों ओर क्यारियाँ थीं।
(xii)	टीबी के मरीज ने दवा का पूरा कोर्स किया और स्वस्थ हो गया।	टीबी के जिस मरीज ने दवा का पूरा कोर्स किया था। वह स्वस्थ हो गया।

पद्य-भाग

पाठ-4

मनुष्यता -मैथिलीशरण गुप्त

*-व्याख्या

1-विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मारा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु- प्रवृति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि बताना चाहता है कि मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या -: कवि कहता है कि हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि कहता है कि हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है । मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

2-उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि बताना चाहता है कि जो मनुष्य दूसरों के लिए जीते हैं उनका गुणगान युगों - युगों तक किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात पुस्तकों में किया जाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जीवित व्यक्ति की

तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। कवि कहता है कि जो व्यक्ति पुरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है।

3-क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,

तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।

उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,

सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तिओं के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी ख़ुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है।

4-सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;

वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।

विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,

विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया ,करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा

की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य ,मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।

5-रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,

दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।

अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि सम्पति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहूत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है।

6-अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,

समक्ष ही स्वबाहू जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।

परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,

अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।

रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मवषयों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बड़ो। कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हे अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

7-'मनुष्य मात्रा बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है,

पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,

परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।

अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक - दूसरे के भाई - बन्धु हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई - बन्धु हैं ।यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पिता है, अर्थात सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है कि सभी की आत्मा एक है। कवि कहता है कि यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है।

8-चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,

विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।

घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,

अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि यदि हम ख़ुशी से,सारे कष्टों को हटते हुए ,भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है की समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -**

1-कवि ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

1-कवि ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चिंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद किया जाता है।

2-उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

2- उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चिंता करता है और लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग देता है।

3-कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए क्या उदाहरण दिया है?

3- कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी,कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

4- कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

4- कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-

रहो न भूल के कभी मगांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

अर्थात सम्पति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए कि आपके पास आपके अपनों का साथ है क्योंकि इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं।

5- मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

5- मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

6- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

6- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है ताकि आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मिट जाएगी और सबका कल्याण और समृद्धि होगी।

7- व्यक्ति को किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?इस कविता के आधार पर लिखिए।

7-मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, कवि के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चिंता करे।

8-' मनुष्यता ' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है ?

8- 'मनुष्यता ' कविता के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद्धि संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ताकि हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

⁕-व्याकरण:-

पदबंध:- परिभाषा

पद- वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में- वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। **पदबंध**- जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें **पदबंध** कहते हैं।

पदबंध के भेद

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

(1) संज्ञा-पदबंध

(2) विशेषण-पदबंध

(3) सर्वनाम पदबंध

(4) क्रिया पदबंध

(5) अव्यय पदबंध

(1) **संज्ञा-पदबंध-**

(a)**चार ताकतवर मजदूर** इस भारी चीज को उठा पाए।

(b) राम ने **लंका के राजा रावण** को मार गिराया।

(c) **अयोध्या के राजा दशरथ** के चार पुत्र थे।

(d) **आसमान में उड़ता गुब्बारा** फट गया।

2) विशेषण पदबंध-

a) **तेज चलने वाली** गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

(b) **उस घर के कोने में बैठा हुआ** आदमी जासूस है।

(c) उसका घोड़ा **अत्यंत सुंदर, फुरतीला** और **आज्ञाकारी** है।

(d) **बरगद और पीपल की घनी छाँव** से हमें बहुत सुख मिला।

3) सर्वनाम पदबंध-

(a)**बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने** बालक को डूबने से बचा लिया।

(b)**शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ** पकड़े गए।

(c)**विरोध करने वाले लोगों में से कोई** नहीं बोला।

4) क्रिया पदबंध-

(a) वह बाजार की ओर **आया होगा।**

(b) मुझे मोहन छत से **दिखाई दे रहा है।**

(c) सुरेश नदी में **डूब गया।**

(d) अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**

5) अव्यय पदबंध-

(a)अपने सामान **के साथ** वह चला गया।

(b)**सुबह से शाम तक** वह बैठा रहा।

किसी भी भाषा के वे शब्द **अव्यय** (Indeclinable या inflexible) कहलाते हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पत्र नहीं होता। ...
चूँकि **अव्यय** का रूपान्तर नहीं होता, इसलिए ऐसे शब्द अविकारी होते हैं। **अव्यय** का शाब्दिक अर्थ है- 'जो व्यय न हो। '

(i) कालवाचक अव्यय- इनमें समय का बोध होता है। जैसे- आज, कल, तुरन्त, पीछे, पहले, अब, जब, तब, कभी-कभी, कब, अब से, नित्य, जब से, सदा से, अभी, तभी, आजकल और कभी।
उदाहरणार्थ-
अब से ऐसी बात नहीं होगी।
ऐसी बात सदा से होती रही है।
वह कब आया, मुझे पता नहीं।

(ii) स्थानवाचक अव्यय- इससे स्थान का बोध होता है। जैसे- यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, यहाँ से, वहाँ से, इधर-उधर। उदाहरणार्थ-
वह यहाँ नहीं है।
वह कहाँ जायेगा ?
वहाँ कोई नहीं है।
जहाँ तुम हो, वहाँ मैं हूँ।

(iii) दिशावाचक अव्यय- इससे दिशा का बोध होता है। जैसे- इधर, उधर, जिधर, दूर, परे, अलग, दाहिने, बाएँ, आरपार।

(iv) स्थितिवाचक अव्यय- नीचे, ऊपर तले, सामने, बाहर, भीतर इत्यादि।

अव्यय के भेद
अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते है -

(1) क्रियाविशेषण (Adverb)

(2) संबंधबोधक (Preposition)

(3) समुच्चयबोधक (Conjunction)

(4) विस्मयादिबोधक (Interjection)

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते है।

दूसरे शब्दो में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते है, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।
जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।
इन वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'वहाँ' और 'अभी' राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता हैं।
वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

क्रिया विशेषण के प्रकार

(1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध
(2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण
(3) अर्थ के अनुसार- (i) परिमाणवाचक (ii) रीतिवाचक

(1) 'प्रयोग' के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद हैं-

(i) साधारण क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का प्रयोग किसी वाक्य में स्वतन्त्र होता हैं, उन्हें 'साधारण क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।
जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ? बेटा, जल्दी आओ। अरे ! साँप कहाँ गया ?

(ii) संयोजक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से रहता है, उन्हें ' संयोजक क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।
जैसे- जब रोहिताश्र्व ही नहीं, तो मैं ही जीकर क्या करूँगी ! जहाँ अभी समुद्र हैं, वहाँ किसी समय जंगल था।

(iii) अनुबद्ध क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों के प्रयोग अवधारण (निश्र्चय) के लिए किसी भी शब्दभेद के साथ होता हो, उन्हें 'अनुबद्ध क्रियाविशेषण' कहा जाता है।
जैसे- यह तो किसी ने धोखा ही दिया है। मैंने उसे देखा तक नहीं।

(2) रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद हैं-

(i) मूल क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, 'मूल क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।
जैसे- ठीक, दूर, अचानक, फिर, नहीं।

(ii) यौगिक क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने पर बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- मन से, जिससे, चुपके से, भूल से, देखते हुए, यहाँ तक, झट से, वहाँ पर। यौगिक क्रियाविशेषण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, धातु और अव्यय के मेल से बनते हैं।

यौगिक क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनते हैं-

(i) संज्ञाओं की द्विरुक्ति से- घर-घर, घड़ी-घड़ी, बीच-बीच, हाथों-हाथ।

(ii) दो भिन्न संज्ञाओं के मेल से- दिन-रात, साँझ-सबेरे, घर-बाहर, देश-विदेश।

(iii) विशेषणों की द्विरुक्ति से- एक-एक, ठीक-ठीक, साफ-साफ।

(iv) क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से- धीरे-धीरे, जहाँ-तहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ।

(v) दो क्रियाविशेषणों के मेल से- जहाँ-तहाँ, जहाँ-कहीं, जब-तब, जब-कभी, कल-परसों, आस-पास।

(vi) दो भिन्न या समान क्रियाविशेषणों के बीच 'न' लगाने से- कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ।

(vii) अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से- पटपट, तड़तड़, सटासट, धड़ाधड़।

(viii) संज्ञा और विशेषण के योग से- एक साथ, एक बार, दो बार।

(ix) अव्य य और दूसरे शब्दों के मेल से- प्रतिदिन, यथाक्रम, अनजाने, आजन्म।

(x) पूर्वकालिक कृदन्त और विशेषण के मेल से- विशेषकर, बहुतकर, मुख्यकर, एक-एककर।

(iii) स्थानीय क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो बिना रूपान्तर के किसी विशेष स्थान में आते हैं, 'स्थानीय क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- वह अपना सिर पढ़ेगा।

वह दौड़कर चलते हैं।